विचार बिन्दु

मन एक भीरु शत्रु है जो सदैव पीठ के पीछे से वार करता है। –प्रेमचंद

आयुर्वेद के रसायन मौत के मुंह से निकाल लाने में सक्षम हैं

जीवन में एक ऐसा समय आता है जब कितना ही बुद्धिमान डॉक्टर हो या कितनी ही बढ़िया चिकित्सा हो, रोग ठीक करना मुश्किल हो जाता है। यदि व्यक्ति का बल और मांस क्षीण हो जाये तो ऐसा भान होने लगता है जैसे आयु पूरी हो चुकी है। कोई महाव्याधि अचानक निवर्तित हो जाये व भोजन से मिलने वाले लाभ मिलना भी बंद हो जायें तो भी यही स्थिति बनती है (देखें, सु.सू.32.7-8): चिकित्स्यमानः सम्यक च विकारो योऽभिवर्धते। प्रक्षीणबलमांसस्य लक्षणं तद्गतायुषः।। निवर्तते महाव्याधिः सहसा यस्य देहिनः। न चाहारफलं यस्य दृश्यते स विनश्यति।। जानी-मानी व बहुत लोगों पर सफल और बढ़िया तैयार औषधि भी यदि किसी व्यक्ति में वांछित प्रभाव ना दे पा रही हो तो व्यक्ति को गैर-उपचार योग्य श्रेणी में माना जाता है। चिकित्सक की सलाह से तैयार कर दिये गये भोजन का वांछित परिणाम नहीं मिल रहा हो, तो चिंताजनक स्थिति मानी जाती है (देखें, च.इ.12.7-8): विज्ञातं बहुशः सिद्धं विधिवच्चावचारितम्। न सिध्यत्योषधं यस्य नास्ति तस्य चिकित्सितम्।। आहारमुपयुञ्जानो भिषजा सूपकल्पितम्। यः फलं तस्य नाप्नोति दुर्लभं तस्य जीवितम्।। बात यहां अति-कठिन परिस्थिति की है।

वस्तुतः आयुर्वेद के दृष्टिकोण से माना जाता है कि जब मृत्यु का समय निकट आता है तो कुछ अरिष्ट प्रकट होते हैं (देखें, च.इ.2.5): न त्वरिष्टस्य जातस्य नाशोऽस्ति मरणादृते। मरणं चापि तन्नास्ति यन्नारिष्टपुरःसरम्।। किन्तु माना यह भी जाता है कि अरिष्ट को निर्विवाद रूप से पहचानने में त्रुटि भी हो सकती है (देखें, च.इ.2.6): मिथ्यादृष्टमरिष्टाभमनरिष्टमजानता। अरिष्टं वाऽप्यसम्बुद्धमेतत् प्रज्ञापराधजम्।। कहने का तात्पर्य यह है कि हो सकता है वास्तव में अरिष्ट प्रकट ना हुआ हो, फिर भी त्रुटिवश प्रकट हुआ मान लिया जाये। अतः यदि भ्रम की स्थिति हो तो चिकित्सा की जाये या नहीं? यदि हाँ, तो कैसी चिकित्सा उपयुक्त हो सकती है? मेरे विचार से अरिष्ट की सही या गलत पहचान के पचड़े से बाहर निकलकर चिकित्सा करना ही उचित है। ऐसे अनेक लोग हैं जिन्हें अंतिम स्थिति में पहुंचा हुआ मानकर धरती पर लिटाकर तुलसी और गंगाजल खिला-पिला दिया गया। गाय की बछिया की पूंछ पकड़ा कर दान-पुण्य भी करा दिया गया। पर वे फिर उठ खड़े हुये और कई साल चले। इसलिये जब तक प्राण हैं, चिकित्सा करना उपयोगी है।

अब प्रश्न यह है कि ऐसी कौन सी चिकित्सा है जो अरिष्ट निवारण में सक्षम हो सकती है? वैसे तो अरिष्ट-निवारण की सामर्थ्य कम ही व्यक्तियों में होती है, तथापि यह असंभव नहीं है। अरिष्ट प्रकट होने के बाद भी युक्ति-व्यपाश्रय, सत्त्वावजय और दैव-व्यपाश्रय की त्रिवेणी में की गयी चिकित्सा मृत्यु को टाल सकती है। इसका संकेत वैज्ञानिक-महर्षि आचार्य सुश्रुत ने दिया है। रिष्ट उत्पन्न होने पर मृत्यु निश्चित है, तथापि मानस दोषों से मुक्त विद्वान के द्वारा या रसायन, तप, और जप में पारंगत व्यक्ति द्वारा मृत्यु का निवारण किया जा सकता है (देखें, सु.सू.28.5): ध्रुवन्तु मरणं रिष्टे ब्राह्मणैस्तत् किलामलैः। रसायनतपोजप्यतत्परैर्वा निर्वार्य्यते।। कठिन रोगों की स्थिति में भी बचने की संभावना यही साफ़ दृष्टिगोचर है।

क्या वास्तव में रसायन इतने उपयोगी और प्रभावी हैं? संहिताओं, शोध और अनुभव तीनों में ही इस प्रश्न का उत्तर धनात्मक ही मिलता है। आइये पहले संहिताओं के वे प्रमाण देखते हैं जो केवल कठिन रोगों व परिस्थितियों के सन्दर्भ में हैं। पहला प्रमाण आचार्य सुश्रुत के उस कथन से मिलता है जिसमें रोगों की सूची देते हुये संकेत किया गया है कि ये रोग रसायन के बिना असाध्य हो जाते हैं (देखें, सु.सू.33.3): ये जुष्टा व्याधयो यान्त्यवार्यताम्। रसायनाद्विना वत्स तान् शृण्वेकमना मम।। इस संदर्भ से यह संकेत तो स्पष्ट है ही कि रसायन से रोगों को उन अवस्थाओं में जाने से रोका जा सकता है जहां वे चिकित्सा की दृष्टि से असाध्य हो जाते हैं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि रसायन असाध्य रोगों को भी साध्य बनाते हुये चिकित्सा में मददगार हो सकते हैं। उदाहरण के लिये, हालांकि कुष्ठ और प्रमेह असाध्य होते हैं, पर आचार्य सुश्रुत ने स्वयं एक ऐसा योग दिया है जो असाध्य कुष्ठ और प्रमेह को भी ठीक कर देता है (सु.चि. 10.12): एषौषधायस्कृतिरसाध्यं कुष्ठं प्रमेहं वा साधयति। वस्तुतः यह उस सिद्धान्त की विजय है जिसमें आचार्य चरक ने चिकित्सा की सफलता में युक्ति को सर्वोपरि माना है। यहां निहितार्थ यह है कि यदि रसायन चिकित्सा की जाये तो ये रोग असाध्य नहीं हो पाते। आधुनिक वैज्ञानिक शोध में रसायन उसी प्रकार उपयोगी पाये गये हैं जैसा कि आचार्य सुश्रुत ने निर्दिष्ट किया है। दूसरा प्रमाण, चरकसंहिता की टीका में चक्रपाणि द्वारा महर्षिअगस्त्य को उद्धृत करते हुए कहा गया है कि रसायन, तप व जप में सिद्ध महान लोग काल मृत्यु को भी जीत लेते हैं, पर आलसी आदमी नहीं (देखें, च.सू.1.62 पर चक्रपाणि.): रसायनतपो जापयोगसिद्धैर्महात्मभिः। कालमृत्युरपि प्राज्ञैर्जीयते नालसैर्नरैः।। तीसरा प्रमाण महर्षि-वैज्ञानिक आचार्य चरक द्वारा सोसायटल कोलैप्स या जनपदोध्वंश की स्थिति-हवा, पानी, मिट्टी और ऋतुओं के प्रदूषित हो जाने से उत्पन्न महामारियां-में पंचकर्म व रसायनों के द्वारा समस्या निवारण हेतु सुझाया गया रास्ता है (देखें, च.वि.3.13-14): येषां न मृत्युसामान्यं सामान्यं न च कर्मणाम्।कर्म पञ्चिवधं तेषां भेषजं परमुच्यते।। रसायनानां विधिवच्चोपयोगः शस्यते। शस्यते देहवृत्तिश्च भेषजैः पूर्वमुद्धृतैः।। रसायन द्रव्यों के साथ ही अद्रव्य रसायन भी हैं जो सत्त्वावजय और दैव-व्यपाश्रय चिकित्सा में मददगार हैं। उदाहरण के लिये दान, विनम्रता, दया, सत्य, ब्रह्मचर्य, कृतज्ञता, मित्रता, रसायन व अच्छे कार्य सब उम्रवर्धक हैं (अ.हृ.शा.3.120): दानशीलदयासत्य ब्रह्मचर्यकृतज्ञताः। रसायनानि मैत्री च पुण्यायुर्वृद्धिकृद्गणः।।

आयुर्वेदाचार्यों की देखरेख में लिये जाने वाले रसायन मौत के मुंह से निकाल लाने की क्षमता रखते हैं। रसायनों की क्षमताओं को पहचानिये। रसायन जरा-व्याधि का नाश तो करते ही हैं, जीवन का नाश भी रोक सकते हैं।शोध में रसायन बहुपयोगी पाये गये हैं।

संहिताओं के साथ ही आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों से भी रसायनों की क्रियात्मकता के ठोस प्रमाण मिल रहे हैं। मेरे ज्ञान में रसायन योगों पर 2100 शोधपत्र और एकल रसायनों पर कम से कम 5000 शोधपत्रों में से एक भी ऐसा नहीं है जिसमें रसायनों की त्रिदोष-नियामकता पर ठोस प्रश्नचिन्ह लगाया हो। आइये कुछ उदाहरण देखते हैं।

उम्र-आधारित रोगजनन का एक प्रमुख कारण डी.एन.ए. रिपेयर मैकेनिज्म में गड़बड़ी होना माना जाता है। जीवित कोशिकाओं के गुणसूत्रों में पाये जाने वाले तंतुनुमा अणु को डीऑक्सीराइबोन्यूक्लिक एसिड या डी.एन.ए. कहा जाता है। इसी में अनुवांशिक कोड निहित रहता है। जैसे-जैसे डी.एन.ए. डैमेज का बोझ बढ़ता जाता है, शरीर बुढ़ापे की ओर बढ़ता जाता है। इस कारण अनेक समस्यायें जैसे कैंसर, न्येरोडीजेनरेशन और बढ़ती उम्र के कारण होने वाली अनेक व्याधियां विकसित हो जाती हैं। शरीर की कोशिकाओं द्वारा डी.एन.ए. डैमेज के संकेत प्राप्त करना और टूट-फूट की मरम्मत करने की क्षमता उम्र के साथ घटती जाती है। इसीलिये बढ़ती उम्र में अनेक रोग लग जाते हैं।

तो क्या आयुर्वेद के रसायन बढ़ती उम्र के लोगों में डी.एन.ए. रिपेयर मैकेनिज्म की गति को बढ़ा सकते हैं? इस विषय में कई अध्ययनों से यह सिद्ध होता है कि रसायन औषधियाँ डी.एन.ए. रिपेयर की गति को बढ़ाकर बुढ़ापा आने की गति को धीमा कर देती हैं। हाल में हुये एक क्लीनिकल ट्रायल में पाया गया कि आमलकी रसायन के प्रयोग से डी.एन.ए. स्ट्रैंड में तोड़फोड़ की गति कम होती है तथा रिपेयर मैकेनिज्म तेज हो जाती है। यह रसायन सुरक्षित भी पाया गया है। एक अन्य अध्ययन में, जो 45-60 वर्ष के लागों के मध्य किया गया, पाया गया है कि आमलकी रसायन का प्रयोग रक्त की परिफेरल ब्लड मोनोन्यूलियर सेल्स में टीलोमीयर की लम्बाई में बदलाव किये बिना टीलोमेरेज क्रियात्मकता को बढ़ा देता है। इससे चूंकि टीलोमियर के क्षरण में कमी आती है, अतः हैल्थस्पान में बेहतरी होती है। एक तीसरा उदाहरण अश्वगंधा का दिया जा सकता है। कुल 50 स्वस्थ खिलाड़ियों के मध्य किये गये क्लीनिकल ट्रायल में यह पाया गया है कि अश्वगंधा की जड़ों का एक्सट्रैक्टकार्डियोरेस्पायरेटरी सहनशीलता को बढ़ा देता है। इसके अलावा अनेक इनवाइट्रो, इन वाईवो और क्लिनिकल अध्ययन में अश्वगंधा और आमलकी सहित तमाम रसायनों द्वारा कैंसर, मधुमेह, कार्डियोवैस्कुलर बीमारियां, मानसिक बीमारियों तथा अपर-रेस्पायरेटरी-ट्रैक्ट संक्रमण से बचाव होता है। एक प्रमाण-आधारित तथ्य यह भी है कि आयुर्वेद के रसायनों से बेहतर एंटी-एंग्जाइटी व वाजीकर से बेहतर एंटी-डिप्रेशेंट औषधि कोई नहीं है। बुढ़ापा आने का एक कारण ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इनफ्लेमेशन का बढ़ना भी है। रसायन द्रव्यों के उपयोग करते रहने से शरीर का व्याधित्रक्षमत्व बढ़ता है तथा ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इनफ्लेमेशन में कमी होती है।

उत्तम बात यह है कि कुछ ऐसे द्रव्य हैं जो आहार, रसायन और औषधि, तीनों ही प्रकारों में वर्गीकृत हैं। फल व सूखे मेवे, खजूर, द्राक्षा, मुनक्का, बादाम, तिल, आँवला, लहसुन, सोंठ, कालीमिर्च, पिपली, हल्दी, केसर, जीरा, धनिया, मूंग, जल, दूध, घी, तुलसी, शहद, गुड़, त्रिकटु एवं त्रिफला आदि ऐसे द्रव्य हैं जिनके युक्तिपूर्वक सेवन के लिये किसी क्लिनिकल ट्रायल का इंतज़ार करने की आवश्यकता नहीं है। संहिता, साइंस और अनुभव सब इन द्रव्यों के पक्ष में हैं।

मृत्यु की तिथि तय नहीं है, अपितु प्राणियों की आयु युक्ति की अपेक्षा रखती है (च.वि. 3.29: भूतानामायुर्युक्तिमपेक्षते। युक्ति से उम्र बढ़ सकती है। असल में युक्तिव्यपाश्रय आचार्य चरक द्वारा आयुर्वेदाचार्यों पर किये गये विश्वास की पराकाष्ठा है। चिकित्सा में सफलता युक्ति पर निर्भर है (च.सू. 2.16): सिद्धिर्युक्तौ प्रतिष्ठिता। जब सफलता युक्ति पर आश्रित हो तो साध्य-असाध्य या अरिष्ट की जाँच-परख से ज्यादा महत्त्व युक्ति के प्रयोग पर दिया जाना चाहिये। और इस युक्ति में रसायन महत्वपूर्ण भूमिका रखते हैं। इसलिये मेरा मानना है कि आयुर्वेदाचार्यों की देखरेख में लिये जाने वाले रसायन मौत के मुंह से निकाल लाने की क्षमता रखते हैं। रसायनों की क्षमताओं को पहचानिये। रसायन जरा-व्याधि का नाश तो करते ही हैं, जीवन का नाश भी रोक सकते हैं।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

सामाजिक धरोहरों के संरक्षण में वंशावलियों का महत्वपूर्ण योगदान : महेन्द्र सिंह बोराज

अजमेर, (कासं)। महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय के जनसंख्या अध्ययन विभाग के तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में यह विचार उभर कर सामने आया कि सामाजिक धरोहर के संरक्षण व सुरक्षा में वंशावलियों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। वंशावली लेखन से जहां आत्मीयता तथा गौरव का अनुभव होता है, वहीं इतिहास की वास्तविकता को भी वास्तविक रूप से प्रकट किया जा सकता है।

शनिवार को आयोजित प्रथम तकनीकी सत्र के विषय प्रवर्तक मेजर एसएन माथुर ने कहा कि भारत ही नहीं वरन सम्पूर्ण एशिया की संस्कृति में समानता का भाव व्याप्त है। उन्होंने कहा कि यूरोपीय राष्ट्रों में भी सनातन धर्म विद्यमान है। लिथुआनिया के लोग स्वयं को राजपूत मानते हैं तथा भारत के समस्त पौराणिक देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना भी करते हैं। इतना ही नहीं भारत के समान ही कितने ही संस्कारों को यहां पर अपनाया हुआ है।

माथुर ने अनेक देशों सहित हंगरी के खान-पान, रहन-सहन व वहां के सैन्य व्यवस्थाओं के बारे में भी महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। उन्होंने कहा कि वंशावली लेखकों को भारत में जहां भाट व चारण कहा जाता है, वहीं हंगरी में इनको बाड़ कहा जाता है।

एमडीएस विश्वविद्यालय में चौहान वंश के इतिहास पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन हुआ।

दूसरे तकनीकी सत्र के मुख्य वक्ता एवं वंशावली अकादमी के अध्यक्ष राव महेन्द्र सिंह बोराज ने वंशावली परंपरा महत्व एवं प्रासंगिकता पर अपना उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए कहा कि वंशावली लेखन से जो गौरव की अनुभूति होती है, वह इंटरनेट या किसी अन्य तकनीकी जानकारी से नहीं हो सकती है। युवा पीढ़ी को वंशावली लेखन से प्रेरणा लेनी चाहिए ताकि भावी पीढ़ी को मार्गदर्शन मिल सके। बोराज ने वंशावली लेखन के बारे में जानकारी देते हुए तथा इसके इतिहास के उदाहरण साझा करते हुए कहा कि बेनजीर भुट्टो स्वयं राजपूत वंशज थी। उन्होंने कहा कि बेनजीर भुट्टो ने अपनी आत्मकथा में स्वयं को राजपूत वंशज बताया है। वंशावली के माध्यम से ऐसी सत्यता उजागर हो जाने से निसन्देह व्यक्ति में आत्मीयता व भाईचारे का विकास होने लगता है।

मुख्य वक्ता के रूप में हंगरी के कोवाच इमरे बरना ने हूण चौहानों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि औषधि निर्माण, भोजन निर्माण की प्रक्रिया भारत से समानता रखती है। उन्होंने इसके लिए स्तूप, औजार, सिक्कों, मूर्तियों आदि के माध्यम से हंगरी वासियों की जड़े भारत में होना बताया। उन्होंने यहां तक कहा कि उनके स्वयं के पूर्वज बिहार के निवासी थे तथा एक बिहार भारत में इसी नाम से एक शहर हंगरी में भी है।

- **लेखकों को भारत में भाट व हंगरी में बाड़ कहा जाता है**
- **स्तूप, औजार, सिक्कों के हिसाब से हंगरी की जड़े भारत में**

चौहान वंश का इतिहास विषयक दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन समारोह विश्वविद्यालय स्थित स्वराज सभागार में आयोजित किया गया। तकनीकी सत्र के बाद खुला सत्र का आयोजन किया गया जिसमें उपस्थित श्रोता व शोधार्थियों ने अनेक जिज्ञासा भरे प्रश्न पूछे, जिनका संतोषप्रद जवाब विषय विशेषज्ञों ने दिया। जनसंख्या अध्ययन विभाग की विभागाध्यक्ष एंव संगोष्ठी निदेशिका प्रो. लक्ष्मी ठाकुर ने अतिथियों का स्वागत एंव संगोष्ठी का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

बांरा सहरिया बस्ती में जंजीरों में कैद मानसिक रोगी

बारां, (निसं)। काकडदा ग्राम पंचायत मुख्यालय पर सहरिया बस्ती में रामचरण सहरिया का परिवार निवास करता है। यह परिवार लम्बे समय से परेशान है। उन्होंने बताया कि मेरा लड़का लोकेश 2 -3 वर्ष का था तब से उसका मानसिक संतुलन बिगड़ा हुआ है। 9-10 साल पूरा परिवार परेशान है। यह बोलता भी नहीं है। मौन रहता है। इसको एक पेड़ से जंजीर से बांध रखा है। अगर इसको खोल दिया जाए तो यह किसी के साथ भी घटना घटित कर सकता है। मोहल्ले के लोग भी डरे हुए रहते हैं। इसने घर वालों को भी कई बार घायल कर दिया।

- **परिजनों को भी कर देता है चोटिल**

पिता ने बताया कि इसका कोटा में काफी इलाज भी करवाया गया मगर उसके बाद भी यह ठीक नहीं हुआ। परिवार के लोगों को इसकी रखवाली करनी पड़ती है। कई बार तो इसने पिता व माता के ऊपर हमला कर दिया। लोकेश सहरिया को एक पेड़ से जंजीर से बांध यहीं खाना-पीना दिया जाता है। लोकेश के दिन रात नहीं निकलते हैं व दिन के समय एक व्यक्ति इसके आस -पास ही रहता है। अगर यह बिगड़ जाए तो बस में नहीं आता है, और चिल्लाता है।

बारां में मानसिक रोगी लोकेश 9-10 साल से जंजीरों में कैद है।

रामचरण सहरिया ने बताया कि मेरे दो लड़के है, बड़ा लड़का राकेश है, जिसने बीएड कर रखा है। लोकेश को यह बीमारी बचपन से ही है। घर वालों का कहना है कि आखिर कब तक इसका इलाज करवायें। डॉ बोलते है इसको घर ले जाओ इसको भर्ती भी नहीं रखते हैं। दिनों दिन परिवार की आर्थिक स्थिति खराब होती जा रही है। मेहनत मजदूरी करें या इसकी रखवाली करें।

इस सम्बंध में एसडीएम गोपाल मीणा किशनगंज का कहना है कि इस तरह का मामला मेरे जानकारी में नहीं है, एचआरटीसी बारां के द्वारा ही जानकारी मिली है। इस मामले की जानकारी करवाकर हरसंभव मदद की जावेगी।

मानपुरा माचेड़ी में वाहन की टक्कर से बघेरे की मौत

मानपुरा माचैडी, (निसं)। दिल्ली-अजमेर एक्सप्रेस हाईवे पर मानपुरा माचैड़ी के सेवड माता मन्दिर के पास शुक्रवार देर रात को एक बघेरा किसी वाहन की चपेट में आ गया जिससे उसकी मौत हो गई। हाईवे पेट्रोलिंग टीम ने बघेरे को हाईवे से एक तरफ कर वन विभाग को सूचना दी। सूचना पर वनविभाग के कर्मचारियों ने पहुंच बघेरे के शव को अपने कब्जे में लिया और पोस्टमार्टम करवाकर दाह संस्कार कर दिया गया।

वनविभाग के सहायक वनपाल हिम्मत सिंह ने बताया कि बघेरा मादा है और उसकी उम्र करीब डेढ़ वर्ष है। मानपुरा माचैड़ी की पहाड़ी से पूठ का बास की पहाड़ी की ओर जाते समय बघेरा हाईवे पर वाहन की चपेट में आ गया। गौरतलब है कि करीबन साढ़े पांच वर्ष पूर्व 2012 में भी सेवड माता मन्दिर के पास एक मादा बघेरा हाईवे को पार करने के दौरान रात्रि में अज्ञात वाहन की चपेट में आकर मर गया था।

बघेरे का चंदवाजी पशु चिकित्सालय में डॉक्टर दीपक गुप्ता सहित तीन चिकित्सकों के दल ने पोस्टमार्टम किया। बाद में गिरदावर घनश्याम शुक्ला,पटवारी परमात्मा शरण शर्मा व पुलिस की मौजूदगी में बघेरे का दाह संस्कार कर दिया गया।

ज़नवाणी

तीन तलाक के विरुद्ध बना जयपुर

तीन तलाक एक सामाजिक बुराई है और मोदी सरकार ने इस पर पाबन्दी लगाने की पहल की लेकिन जयपुर की मुस्लिम महिलाओं ने इसका विरोध दर्ज कराया और पहली बार लाखों मुस्लिम महिलाओं ने सड़क पर उतर विरोध किया लेकिन साथ ही उन्होंने इस बिल को उनके शरीयत के विरुद्ध बताया और कहा– उनकी हिफाजत केवल शरीयत से ही है। जबकि अन्य लोगों ने इसे गलत तरीके से पेश करने की वकालत की। जो भी हो अब मोदी सरकार को विचार करने की जरूरत है कि वे तीन तलाक पर क्या वाजिब कार्यवाही करते हैं।

–घेवरचन्द गोदीका, जयपुर (राज.)

बिलखता किसान – हँसती सरकार

जिन दो प्रमुख कारकों के महत्व को स्वीकार कर उन्हें सम्मान दान करते हुए कहा गया कि 'जय जवान-जय किसान' लेकिन आज देश के प्रमुख ये दो आधार सबसे अधिक परेशान हैं। सरकार इनके लिए विशेष जागरुक दिखाई नहीं देती। राजस्थान में तो प्रदेश के किसानों की हालत दिनों-दिन कमजोर होती जा रही है। अपनी कठिन श्रम से उपजाई फसल की समुचित तरीके से अपनी बात 'मदमस्त' सरकार के समक्ष या तो रख नहीं पाता या फिर उसकी बात को सुना ही नहीं जाता। बड़ा और अधिक बड़ा और छोटा और अधिक छोटा होता जा रहा है। कोई करोड़ों खाकर विदेश जा बैठता है तो गरीब किसान को बैंक बीसों चक्कर लगवाता है।

–बी.सी.धाकड़, जयपुर (राज.)

कार्टूनी नज़रिया

हिन्दू से साभार

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

रविवार 11 मार्च, 2018

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2074, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र, व्यतिपात योग, गर करण, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–कुम्भ, चन्द्रमा–धनु, मंगल–धनु, बुध–मीन, गुरू–तुला, शुक्र–मीन, शनि–धनु, राहु–कर्क, केतु–मकर राशि में।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र सोमवार प्रातः 9:34 तक, व्यतिपात योग सायं 7:44 तक है।

इसके पश्चात उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, वरियान योग, वाणिज करण आरम्भ होगा।

आज भद्रा रात्रि 9:55 से सोमवार दिन 11:41 तक है।

आज व्यतिपात पुण्य है और आज नवमी तिथि में वृद्धि हुई है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:13 से 9:41 तक, लाभ-अमृत 9:41 से 12:37 तक, शुभ 2:05 से 3:33 तक।

राहुकाल: 4:30 से 6:00 तक।

मेष

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

वृष

मित्रों-रिश्तेदारों से संबंध खराब हो सकते हैं। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

मिथुन

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क

व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेंगी। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

सिंह

खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। वाद-विवाद बढ़ने का भय है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

कन्या

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

तुला

महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता हो सकती है। नये-पुराने मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

वृश्चिक

धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा।

धनु

अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।

मकर

अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। आवश्यक धन खर्च होगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

कुंभ

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त हो सकता है। घर/परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त होंगे।

मीन

अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।